

डॉ. डेव मैथ्यूसन, उनका आगमन कहां है? सत्र 3, पॉल की शिक्षा में पारूसिया का विलम्ब

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड मैथ्यूसन द्वारा इस प्रश्न पर दिए गए अपने शिक्षण में है, उनका आगमन कहां है? सत्र 3, पॉल के शिक्षण में पारूसिया का विलम्ब।

हमने पिछले व्याख्यान में यीशु और सुसमाचार की शिक्षाओं पर विचार किया और कुछ कथनों पर विचार किया, जिन्हें यह सुझाव देने के लिए लिया जा सकता है कि यीशु अपने दूसरे आगमन, दुनिया के अंत, इतिहास के अंत में उनके आगमन की भविष्यवाणी करने में गलत थे, लेकिन फिर गलत थे क्योंकि ऐसा नहीं हुआ। लेकिन हमने इसके लिए अन्य स्पष्टीकरण सुझाए जो अधिक बेहतर थे और यीशु को एक गलत भविष्यवक्ता या ऐसा कुछ के रूप में देखने की आवश्यकता नहीं थी।

अब मैं पॉल के पत्रों पर आगे बढ़ना चाहता हूँ और सवाल पूछना चाहता हूँ, अगर यीशु अंत की भविष्यवाणी करने में गलत नहीं थे, तो पॉल के बारे में क्या? पॉल ने अपने पत्रों में कई ऐसी बातें कही हैं, जिन्हें यह सुझाव देने के लिए लिया जा सकता है कि वह भी ऐसा ही था; पॉल ने सोचा था कि अंत होने वाला है, उसने सोचा था कि यीशु तुरंत वापस आ जाएगा, लेकिन वह नहीं आया, और इसलिए पॉल गलत था। मैं उनमें से कुछ पर नज़र डालना चाहता हूँ। ऐसा करने से पहले, मैं प्रेरितों के काम की किताब के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ।

मैं प्रेरितों के काम में किसी विशेष पाठ को नहीं देखना चाहता, बल्कि पुस्तक की संरचना और पूरी पुस्तक तथा विशेष रूप से एक पद पर एक अवलोकन करना चाहता हूँ और यह देखना चाहता हूँ कि यह पारूसिया में देरी के मुद्दे से कैसे संबंधित हो सकता है। प्रेरितों के काम की पुस्तक वास्तव में वहीं से शुरू होती है जहाँ लूका समाप्त होता है। लूका 24, पद 29 में आने वाली आत्मा के वादे के साथ समाप्त होता है।

अब वह आदेश फिर से दोहराया गया है, शिष्यों को वादा किए गए आत्मा के लिए प्रतीक्षा करने के लिए एक आह्वान। अब वह आदेश प्रेरितों के काम 1, पद 5, और पद 8 में फिर से दोहराया गया है, और फिर प्रेरितों के काम 2 में इसकी पूर्ति होती है क्योंकि आत्मा उंडेली जाती है। मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि प्रेरितों के काम 1:8 में संकेतित पुस्तक की संरचना क्या है। प्रेरितों के काम 1.8 को एक परिचय या एक मोटे तौर पर योजना के रूप में देखा जा सकता है, पूरी पुस्तक की एक आधार योजना जहाँ यीशु अपने शिष्यों से वादा किए गए आत्मा को प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करने के लिए कहता है।

फिर वह उनसे कहता है कि वे यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और फिर अंत में पृथ्वी के छोर तक उसके गवाह होंगे। प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाकी हिस्से को इस बात की व्याख्या के रूप में देखा जा सकता है कि कैसे सुसमाचार यरूशलेम में शुरू होता है, विशेष रूप से प्रेरितों

के काम 2 में, पवित्र आत्मा का उंडेला जाना। यह यहूदिया में फैलता है, सामरिया में समाप्त होता है, और अंततः कम से कम यहूदी क्षेत्रों में फैल जाता है और गैर-यहूदी क्षेत्रों को अपने में समाहित कर लेता है। यह अंततः पुस्तक के अंत तक रोम तक पहुँच जाता है।

अब, मैं आपका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि ऐसा लगता है कि इसके लिए ज़रूरी है कि यीशु तुरंत वापस न आएँ, या कम से कम ऐसा होने के लिए कम से कम कुछ समय तो देना ही पड़ेगा। मैं क्रेग कीनर की बेहतरीन प्रेरितों के काम की टिप्पणी पर भरोसा करता हूँ, जहाँ वह तर्क देता है कि पृथ्वी का अंत सिर्फ रोम नहीं है। प्रेरितों के काम 28 रोम के साथ समाप्त होता है, लेकिन कीनर के अनुसार, यह संभवतः पृथ्वी का अंत नहीं है।

यह पृथ्वी के अंत की शुरुआत है। लेकिन प्रेरितों के काम 1:8 में इससे भी अधिक व्यापक कुछ कल्पना की गई है। इसलिए, मेरा कहना यह नहीं है कि प्रेरितों के काम 1:8 में देरी की लंबी अवधि की मांग की गई है।

यह निश्चित रूप से 2,000 साल की देरी की कल्पना नहीं करता है, लेकिन मुद्दा यह है कि प्रेरितों के काम 1.8 और प्रेरितों के काम की पूरी योजना समय-अंतराल की अवधि की अनुमति देती है और शायद संकेत भी देती है, देरी की एक अवधि जो सुसमाचार को सभी राष्ट्रों तक फैलाने के लिए आवश्यक है। हमें यह बताए बिना कि यह कब तक हो सकता है, यह कब तक आवश्यक है, और यह आखिरकार पृथ्वी के छोर तक कब पहुंचेगा, प्रेरितों के काम हमें नहीं बताते हैं। लेकिन यह केवल परमेश्वर की योजना को इंगित करता है कि वह अपने राज्य, अपने वादा किए गए राज्य को फैलाए, सुसमाचार को अंततः पृथ्वी के छोर तक फैलाए जब भी ऐसा हो।

तो, प्रेरितों के काम 1:8 और वास्तव में प्रेरितों के काम की पूरी योजना ऐसा होने के लिए आवश्यक समय की अनुमति देती है और यहां तक कि संकेत भी देती है, जो तब यह भी सुझाव देती है कि नए नियम के लेखकों ने नहीं सोचा था कि यीशु को उनके जीवनकाल में तुरंत वापस आना था। लेकिन इसमें किसी तरह की देरी हो सकती है। तो, इतना कहने के बाद, आइए पौलुस के पत्रों पर चलते हैं।

फिर से, पॉल में कई ऐसे पाठ हैं जिन्हें हम देख सकते हैं। मैं उनमें से केवल दो या तीन को देखना चाहता हूँ जो सबसे लंबे हैं और अच्छे उदाहरण हैं, और शायद सबसे अधिक समस्याग्रस्त हैं, जब बात पारुसिया के विलंब के मुद्दे की आती है और क्या पॉल ने, नए नियम के प्रमुख लेखकों में से एक के रूप में, सोचा था कि क्या पॉल ने सोचा था कि अंत उसके जीवनकाल में आने वाला था और फिर गलत था। जिस पाठ पर मैं सबसे पहले ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, वह 1 कुरिन्थियों 7 में पाया जाता है। 1 कुरिन्थियों 7 में, हम पाते हैं कि पॉल कुरिन्थियन चर्च द्वारा उठाए गए एक मुद्दे को संबोधित करते हैं, कामुकता, विवाह और अविवाहित रहने से संबंधित कई मुद्दे जिन्हें पॉल ने आगे बढ़ाया है।

और जिस भाग पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह है श्लोक 25 से 32 तक। और यहाँ हम पढ़ते हैं: अब कुँवारियों के बारे में, मेरे पास प्रभु की ओर से कोई आदेश नहीं है, लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति के रूप में अपनी राय देता हूँ जो प्रभु की दया से, विश्वासयोग्य है। वर्तमान संकट के

कारण, मुझे लगता है कि एक आदमी के लिए यह अच्छा है कि वह जैसा है, वैसा ही रहे, यानी अविवाहित रहे।

क्या आप किसी पत्नी से बंधे हैं? मुक्त होने या तलाक लेने की कोशिश मत करो। इसलिए, अगर आप शादीशुदा हैं, तो सिर्फ इसलिए कि मैं यह कह रहा हूँ, तलाक लेने की कोशिश मत करो। क्या आप किसी पत्नी से मुक्त हैं? पत्नी की तलाश मत करो।

हालाँकि, अगर तुम शादी करते हो, तो तुमने पाप नहीं किया है। और अगर कोई कुंवारी लड़की शादी करती है, तो उसने पाप नहीं किया है। लेकिन ऐसे लोगों को इस जीवन में परेशानी होगी, और मैं तुम्हें बचाने की कोशिश कर रहा हूँ।

भाइयों और बहनों, मेरा यही मतलब है। समय कम है। इसलिए, अब से, जिनके पास पत्नियाँ हैं, उन्हें ऐसा होना चाहिए जैसे कि उनके पास कोई नहीं है। अजीबोगरीब शादी की सलाह, जो लोग रोते हैं जैसे कि वे रोते ही नहीं, जो लोग खुश होते हैं जैसे कि वे खुश नहीं होते, जो लोग खरीदते हैं जैसे कि उनके पास कुछ भी नहीं है, और जो लोग दुनिया का उपयोग करते हैं जैसे कि उन्होंने इसका पूरा उपयोग नहीं किया।

क्योंकि यह संसार अपने वर्तमान स्वरूप में मिटता जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि तुम चिंतामुक्त रहो। अविवाहित व्यक्ति संसार की बातों, प्रभु की बातों, तथा प्रभु को प्रसन्न करने के तरीकों की चिंता करता है, वही अविवाहित व्यक्ति है।

लेकिन अविवाहित पुरुष इस दुनिया की बातों से चिंतित रहता है, कि वह अपनी पत्नी को कैसे खुश कर सकता है। मैं जो करना चाहता हूँ वह विवाह और उससे जुड़ी सभी बातों के बारे में पॉल की समझ को संबोधित नहीं करना है और हम इनमें से कुछ निर्देशों को कैसे समझते हैं, लेकिन मैं तीन मुख्य वाक्यांशों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ जिनका अक्सर यह सुझाव देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि पॉल ने सोचा था कि अंत आने वाला है, दुनिया का अंत, मसीह का दूसरा आगमन उसके जीवनकाल में तुरंत होने वाला था। लेकिन फिर स्पष्ट रूप से उसने ऐसा नहीं किया, इसलिए पॉल गलत था।

पहला यह वाक्यांश है, वर्तमान संकट जो आपको पद 26 में मिलता है, वर्तमान संकट के कारण। वर्तमान संकट क्या है? कुछ लोगों ने वर्तमान संकट को दूसरे आगमन के संदर्भ के रूप में लिया है; अर्थात्, मसीह का दूसरा आगमन संकट है, अर्थात्, यह उन लोगों के लिए न्याय के रूप में संकट लाएगा जो तैयार नहीं हैं या ऐसा कुछ। तो, यह दूसरे आगमन का संदर्भ हो सकता है।

यह पहली सदी में घटित किसी घटना का संदर्भ हो सकता है, जैसे कि अकाल या किसी तरह का उत्पीड़न जिसका सामना कोरिंथियन ईसाई कर रहे थे। यह तथ्य कि इसे वर्तमान कहा जाता है, संभवतः यह सुझाव देता है कि यह कुछ ऐसा है जिसका सामना कोरिंथियन ईसाई उस समय कर रहे थे। यह संभवतः भविष्य या मसीह के दूसरे आगमन का संदर्भ नहीं देता है, लेकिन मुझे लगता है कि यह निर्धारित करना मुश्किल है कि पॉल वास्तव में किस बात का उल्लेख कर रहा था।

क्या कोई एक खास घटना है, या शायद वह सिर्फ सामान्य परेशानियों के बारे में बात कर रहा है, जिसमें उत्पीड़न और अकाल शामिल हैं, जो उन्हें अनुभव हो सकते हैं, लेकिन शायद सिर्फ सामान्य पीड़ा और परेशानियाँ जो जीवन में आती हैं? और इस वजह से, उसकी सलाह है कि शादी करके इसे और मुश्किल क्यों बनाया जाए। फिर से, वह शादी को हतोत्साहित नहीं कर रहा है या यह नहीं कह रहा है कि यह गलत है या ऐसा मत करो, लेकिन वह बस मौजूदा संकट के कारण चीजों को परिप्रेक्ष्य में रख रहा है।

इसलिए कम से कम वर्तमान संकट या वर्तमान संकट को अविवाहित रहने का कारण बताना शायद मसीह के दूसरे आगमन या इतिहास के अंत का एक युगांतिक संदर्भ नहीं है, बल्कि ऐसा कुछ है जिसे कुरिन्थियों ने वर्तमान में जीवन जीने के हिस्से के रूप में परेशानी या कठिनाइयों के रूप में अनुभव किया था। इसलिए, यह अंत की भविष्यवाणी नहीं है, कम से कम वह तो नहीं। लेकिन निश्चित रूप से, दूसरा वाक्यांश यह है कि श्लोक 29 में समय कम है।

भाइयों और बहनों, मेरा यही मतलब है। समय कम है। अब, निश्चित रूप से यहाँ, अगर कहीं भी, पॉल सोचता है कि यीशु मसीह के लौटने और इतिहास को समाप्त करने से पहले बहुत समय नहीं बचा है। और इसलिए क्या पॉल एक ऐसे अंत की भविष्यवाणी कर रहा है जो कभी नहीं आया, और इसलिए, वह गलत है? वास्तव में, इस शब्द को कम समझना महत्वपूर्ण है।

शब्द छोटा ग्रीक में एक शब्द है जो एक कृदंत है जिसका अर्थ है छोटा या संकुचित। और पॉल वास्तव में जिस बात का उल्लेख कर रहे हैं, वह यह है कि मुझे लगता है, इस दृष्टिकोण को देखते हुए जिसे हम देख रहे हैं, मसीह के पहले आगमन ने पहले से ही अंतिम समय के राज्य का उद्घाटन किया था और पाठक अंत में रह रहे थे। वास्तव में, बाद में अध्याय 10 और श्लोक 11 में, मेरा मानना है कि पॉल ने कुरिन्थ के ईसाइयों का वर्णन उन लोगों के रूप में किया है जिन पर युगों का अंत पहले ही आ चुका था।

वे पहले से ही अंत के समय में रह रहे थे। और इसलिए मसीह के पहले आगमन के कारण, वे बस उस समापन, उस समापन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। वे अंत की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं, वे पहले से ही अंत में हैं, लेकिन वे अंत से अंत तक, एक अर्थ में, उस अवधि की पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

तो, उस परिप्रेक्ष्य को देखते हुए, मुझे लगता है कि पॉल कह रहा है कि मसीह के पहले आगमन के कारण, इस तथ्य के कारण कि युगों का अंत पहले ही आ चुका है, इस तथ्य के कारण कि आप पहले से ही अंतिम समय में रह रहे हैं, यह समय पर एक अलग दृष्टिकोण प्रदान करता है। अब, आपको समय को छोटा और संकुचित रूप में देखना है। आपको इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखना है।

आपको इसे तात्कालिकता की भावना से देखना है। मुद्दा यह नहीं है कि कितना समय बचा है। मुद्दा यह है कि समय के बारे में आपका नया दृष्टिकोण क्या होना चाहिए - इस तथ्य पर आधारित कि आप पहले से ही अंत में रह रहे हैं।

मसीह अपने राज्य और अंतिम समय का उद्घाटन करने के लिए पहले ही आ चुका है। इससे आपको समय को एक अलग नज़रिए से देखना चाहिए, संकुचित, सीमित, सामान्य रूप से नहीं चल रहा। समय हमेशा की तरह नहीं चलने वाला है।

समय सामान्य रूप से चलता नहीं रहेगा। आप समय को सामान्य रूप से नहीं देख सकते क्योंकि यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने अब समय को देखने के आपके तरीके को बदल दिया है। इसे अनिश्चित काल तक चलने वाला या हमेशा की तरह चलने वाला नहीं माना जाना चाहिए।

लेकिन अब, यह तथ्य कि समय संकुचित है, परमेश्वर के लोगों के लिए समय पर इस नए दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जीवन जीने की एक अत्यावश्यकता पैदा करता है। कि मसीह अब किसी भी क्षण वापस आ सकता है क्योंकि समय संकुचित है। तो फिर से, आप देखिए, पौलुस का उद्देश्य यह भविष्यवाणी करना नहीं है कि हम अंत के कितने करीब हैं, यह कहना कि कितना समय बचा है, यह कहना कि बस थोड़ा सा समय बचा है, या यह भविष्यवाणी करने की कोशिश करना कि मसीह अपने जीवनकाल में वापस आने वाला है।

यह समय पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने के बारे में अधिक है। समय अब संकुचित और छोटा हो गया है, इस तथ्य के आधार पर कि हम पहले से ही अंत में रह रहे हैं। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, इससे समय को देखने के हमारे तरीके में मौलिक परिवर्तन आना चाहिए और जीवन को जिम्मेदारी से जीने की तात्कालिकता की भावना पैदा होनी चाहिए।

ऐसा लगता है कि यह पौलुस की चिंता को दर्शाता है जो उसने कुरिन्थ के मसीहियों को संबोधित करते समय व्यक्त की थी, खास तौर पर विवाह के मुद्दों के संबंध में। एक और वाक्य है, और वह है, दुनिया खत्म हो रही है, आयत 31 में। फिर से, कोई इसे इस तरह समझ सकता है कि पौलुस सोच रहा था कि अब ज़्यादा समय नहीं बचा है।

दुनिया खत्म होने वाली है, और यह जल्द ही खत्म हो जाएगी, मसीह के आने के साथ ही इसका अंत हो जाएगा। लेकिन इसके बजाय, मुझे लगता है कि इसका निहितार्थ एक बार फिर इस तथ्य से सामने आता है कि परमेश्वर का राज्य पहले ही आ चुका है। हम पहले से ही अंत में जी रहे हैं।

यीशु की मृत्यु और उनके पहले आगमन पर पुनरुत्थान ने पहले ही अंत का उद्घाटन कर दिया है। इसका मतलब है, अगर परमेश्वर का राज्य पहले ही आ चुका है, तो इसका मतलब यह होना चाहिए कि यह वर्तमान संसार पहले ही समाप्त हो चुका है। ध्यान दें कि वह कहता है कि संसार का स्वरूप समाप्त हो रहा है।

एंथनी थिसलटन के अनुसार, 1 कुरिन्थियों पर अपनी टिप्पणी में, रूप का विचार यह है कि इस दुनिया की बाहरी संरचनाएँ लुप्त हो रही हैं। अर्थात्, इस दुनिया की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक संरचनाएँ और संस्थाएँ समाप्त होने वाली हैं, और इसलिए, पॉल का कहना है कि उन्हें आपके मूल्यों, आपके जीवन और आपके कार्यों को निर्देशित और निर्धारित नहीं करना चाहिए। इसलिए, एक बार फिर, जब वह कहता है कि इस दुनिया का यह वर्तमान रूप, इस दुनिया की संरचना, पहले से ही समाप्त हो रही है, तो पॉल यह नहीं कहता कि यह कब तक होने वाला है।

पॉल यह नहीं कहता कि यह कब तक पूरा होगा। वह केवल यह कहने में दिलचस्पी रखता है कि यह पहले से ही समाप्त होने की प्रक्रिया में है क्योंकि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ने पहले से ही अंत समय का उद्घाटन कर दिया है। हम पहले से ही अंत में रहते हैं।

इसका मतलब यह होना चाहिए कि यह वर्तमान दुनिया और इसकी संरचनाएँ और संस्थाएँ और मूल्य पहले से ही समाप्त होने वाले हैं, बिना पॉल ने हमें यह बताए कि इसके अंत तक पहुँचने में कितना समय लगेगा। इसलिए, एक बार फिर, पॉल इनमें से किसी भी कथन, वर्तमान संकट, कम या संकुचित समय, या दुनिया के खत्म होने की भविष्यवाणी नहीं कर रहा है। लेकिन इसके बजाय, मसीह के आगमन के प्रकाश में, वह अपने पाठकों को अपने संसार को एक अलग तरीके से देखने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान में अंत के आगमन के दृष्टिकोण और परिप्रेक्ष्य से और जिस तरह से हम समय को देखते हैं उसमें क्या अंतर होना चाहिए, और फिर जिस तरह से हम अपना जीवन जीते हैं उसमें क्या अंतर होना चाहिए।

इसलिए, 1 कुरिन्थियों 7 में यह निष्कर्ष निकालने का कोई औचित्य नहीं दिया गया है कि पौलुस ने सोचा था कि यीशु दुनिया का अंत करने के लिए वापस आ रहा है और इसलिए वह गलत था। अगले पाठ में, हम क्रम से आगे बढ़ेंगे। अगला पाठ जिसे मैं देखना चाहता हूँ वह 1 थिस्सलुनीकियों 4 और 5 में पाया जाता है। हमने पहले ही इस पाठ का उल्लेख किया है।

यह वह अंश है जिसे अक्सर पढ़ा जाता है, खास तौर पर अध्याय 4, श्लोक 13 में, अध्याय के अंत के करीब, और यह श्लोकों का वह भाग है जिसे हम अक्सर अंतिम संस्कारों में पढ़ते हैं, प्रसिद्ध पुनरुत्थान अंश। और जिस बात पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह है 15-17 में पॉल के शब्द। अब, मैं इस बारे में बहुत विस्तार से नहीं जाना चाहता कि पॉल ने ये बातें क्यों कहीं, वह किस समस्या को संबोधित कर रहा था, वह किस मुद्दे को संबोधित कर रहा था, लेकिन पॉल की मुख्य चिंता मूल रूप से यह दिखाना है कि जो लोग पहले ही मर चुके हैं, वे मसीह के वापस आने पर नुकसान में नहीं होंगे।

वास्तव में, वह कहता है कि वे पहले जी उठेंगे, और फिर जो जीवित हैं उन्हें हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाया जाएगा। इसलिए, जो लोग पहले से ही कोरिंथियन विश्वासियों और दूसरे युग में मर चुके हैं, उन्हें मसीह के वापस आने पर कोई नुकसान नहीं होगा। वे पूरी तरह से जी उठेंगे।

लेकिन मैं आपका ध्यान जिन आयतों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, वे 1 थिस्सलुनीकियों 4 की आयत 15-17 में पाई जाती हैं। और यहाँ वे हैं। मैं आयत 14 पढ़ूँगा। अब, मैं आपका ध्यान हम शब्द की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जो कि प्रथम पुरुष एकवचन है।

ऐसा लगता है कि पॉल खुद को और अपने पाठकों को उन लोगों में शामिल करता है जो मसीह के वापस आने पर जीवित रहेंगे। और यहाँ वह जिस भाषा का उपयोग करता है वह यीशु मसीह के आगमन या पारुसिया की भाषा है। मुझे लगता है कि यहाँ मैथ्यू 24 के साथ कई समानताएँ हैं, जो स्पष्ट रूप से पारुसिया या मसीह के दूसरे आगमन का उल्लेख कर रही हैं।

इसलिए, पौलुस किसी गुप्त स्वर्गारोहण या किसी अन्य घटना का उल्लेख नहीं कर रहा है। वह इतिहास के अंत में मसीह के आगमन का उल्लेख कर रहा है। लेकिन पौलुस यह कहकर खुद को इस समूह में शामिल करता है, हम जो जीवित हैं।

तो, क्या पॉल ने सोचा था कि जब मसीह वापस आएगा तो वह जीवित होगा? और फिर वह गलत था? कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं और कहते हैं कि बाद में, कुछ साल जीने के बाद, बाद में अपने कुछ पत्रों में, उसने अपना विचार बदल दिया और सोचा कि वह जानता था कि वह मरने वाला है। लेकिन यहाँ, पॉल ने सोचा कि वह मसीह की वापसी में जीवित रहने वाला है। लेकिन फिर, स्पष्ट रूप से, वह गलत था क्योंकि मसीह वापस नहीं आया।

और फिर पौलुस वास्तव में, जैसा कि परंपरा कहती है, अपने विश्वास के लिए शहीद हो गया। तो, हम इसे कैसे समझते हैं? मुझे कुछ अवलोकन करने दें। सबसे पहले, 1 थिस्सलुनीकियों 5:10 पर ध्यान दें। पौलुस यह कहता है: वापस जाएं और पद 9 पढ़ें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध, अपने अंतिम समय के क्रोध और न्याय के लिए नहीं नियुक्त किया, बल्कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया, जो हमारे लिए मर गया ताकि हम चाहे जागते रहें या सोते रहें, हम उसके साथ रह सकें।

दूसरे शब्दों में, कुछ ही आयतों के बाद, पौलुस इस संभावना पर विचार करता है कि वह सो सकता है या मर सकता है। और उसके पाठक सो सकते हैं। सो जाना मृत्यु के लिए एक व्यंजना है।

इसलिए, यह कहना गलत होगा कि पौलुस ने कहा कि हम जो जीवित हैं, इसका मतलब यह है कि पौलुस ने सोचा था कि वह मसीह की वापसी में जीवित रहेगा। बस एक अध्याय बाद, अध्याय 5 और श्लोक 10 में, वह इस संभावना पर विचार करता है कि वह मसीह की वापसी में जीवित नहीं हो सकता है। और यही उसका मुद्दा है।

चाहे हम जीवित हों या सो रहे हों या मर चुके हों, हम फिर भी उसके साथ रहेंगे। इसलिए, मुझे लगता है कि 1 थिस्सलुनीकियों 5:10 हमें यह विश्वास दिलाता है कि पौलुस यह भविष्यवाणी नहीं कर रहा है कि वह वास्तव में जीवित रहेगा क्योंकि वह 5:10 में स्वीकार करता है कि जब मसीह वापस आएगा तो वह शायद जीवित न हो।

और उसके पाठकों को भी। इसलिए, पॉल अध्याय 4 में पारूसिया में जीवित होने की संभावना का सुझाव देता है। लेकिन अध्याय 5 में, संभावना है कि वह शायद जीवित न हो। दूसरा बिंदु यह है कि पॉल को लगता है कि वह पारूसिया में बहुत अच्छी तरह से जीवित हो सकता है।

इस पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है। उस भाषा के साथ, आपको इसे कैसे लेना चाहिए? ऐसा लगता है कि वह सोचता है कि वह बहुत अच्छी तरह से जीवित रह सकता है। लेकिन याद रखें, पॉल को लगता था कि वह पहले से ही अंत में जी रहा था।

पौलुस पहले से ही अंत के समय में जी रहा था क्योंकि अंत के समय का पुनरुत्थान पहले ही हो चुका था। वह यीशु मसीह का पुनरुत्थान है। और उसके बाद जो कुछ होना था वह था उसके लोगों का पुनरुत्थान।

इसलिए, क्योंकि वह पहले से ही अंत में जी रहा था, अंतिम पुनरुत्थान किसी भी समय हो सकता था, यहाँ तक कि पौलुस के जीवनकाल में भी। फिर से, वह समय को उस संकुचित, संक्षिप्त परिप्रेक्ष्य से देख रहा है।

1 कुरिन्थियों अध्याय 7 में। तीसरी बात जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह यह है कि हमें शायद इसे बहुत सटीक रूप से नहीं लेना चाहिए। शायद हमें इसे अधिक सामान्य रूप से लेना चाहिए, बस हम ईसाइयों की तरह। फिर से, पॉल निश्चित रूप से यह भविष्यवाणी नहीं करता है कि जब मसीह वापस आएगा तो वह और उसके पाठक जीवित होंगे।

शायद हमें इसे बहुत सटीक और सटीक रूप से नहीं लेना चाहिए, बल्कि इसे अधिक सामान्य रूप से देखना चाहिए। हम ईसाई जो मसीह के वापस आने पर जीवित हैं। अंतिम बात जिस पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ, वह है, विशेष रूप से 1 थिस्सलुनीकियों 5.10 जैसे अंशों के प्रकाश में, जिन्हें हमने अभी पढ़ा, जहाँ पॉल को नहीं पता कि मसीह के वापस आने पर वह जीवित रहेगा या मर जाएगा, क्योंकि पॉल को मसीह के वापस आने का समय नहीं पता है, इसलिए वह खुद को एकमात्र संभव श्रेणी में रखता है।

इसका मतलब यह है कि चूंकि वह जीवित है, इसलिए हम भी जीवित हैं। खास तौर पर अगर हम इस बात को और भी ध्यान में रखें। हम आम तौर पर ईसाई हैं जो जीवित हैं। इसलिए, पॉल सोचता है कि जब मसीह वापस आएगा तो वह जीवित होगा।

वह निश्चित नहीं है क्योंकि अध्याय 5.10 इसे योग्य बनाता है और हमें बताता है कि वह मर भी सकता है। उसे यकीन नहीं है कि वह जीवित होगा या मर जाएगा। इसलिए, वह उन लोगों को लिखता है जो जीवित हैं और जो जीवित हैं और जो पारुसिया को अच्छी तरह से देख सकते हैं, जो मसीह के पारुसिया की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जो किसी भी समय हो सकता है।

तो, फिर से, पॉल ने खुद को संबोधित करते हुए, लेकिन उन पाठकों को संबोधित करते हुए जो जीवित हैं, मसीह के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जिनके लिए यह किसी भी समय हो सकता है, और लिखते हैं जैसे कि वे जीवित हो सकते हैं जब वह वापस लौटता है, जबकि अध्याय 5.10 में इसे इस तथ्य के साथ स्पष्ट करते हुए कि वे जीवित नहीं हो सकते हैं। वह बस नहीं जानता। इसलिए, पॉल गलत नहीं है और उसने मसीह के आने या दुनिया के अंत की भविष्यवाणी नहीं की जो घटित नहीं हुई, और इसलिए, वह गलत था।

लेकिन नए नियम के बाकी लेखकों के साथ, वह अंत के दृष्टिकोण को साझा करता है, कि अंत समय का उद्घाटन पहले ही हो चुका है। मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ, अंत पहले ही शुरू हो चुका है, और पॉल चीजों को उस दृष्टिकोण से देखता है। और इसलिए, अंत को उसकी पूर्णता, उसके निष्कर्ष पर लाने के लिए मसीह का दूसरा आगमन किसी भी क्षण हो सकता है।

और वह अपने थिस्सलुनीकियन पाठकों को इस तरह संबोधित करता है जैसे कि वे मसीह के लौटने पर जीवित हो सकते हैं और इसमें खुद को भी शामिल करता है, हालांकि अध्याय 5.10 में यह स्वीकार करता है कि वह शायद जीवित न हो। मसीह के लौटने से पहले वे मर सकते हैं। लेकिन चाहे वे जीवित हों या मृत, वे उसके साथ, यीशु मसीह के साथ होंगे।

लेकिन उम्मीद है कि वह उनके जीवनकाल में आएगा, बिना पॉल के यह कहे कि उसे आना ही है या अनिवार्य रूप से आना ही है। इसलिए, एक बार फिर, कम से कम उन आयतों पर, पॉल गलत नहीं है। उसने उस अंत की भविष्यवाणी नहीं की है जो नहीं आया है, बल्कि वह कुछ बहुत अलग कर रहा है।

खास तौर पर इस संदर्भ में, मैं अंत की भविष्यवाणी करने के लिए नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि थिस्सलुनीके के उन मसीहियों को प्रोत्साहित करने के लिए लिख रहा हूँ जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। यह हमें अगली किताब की ओर ले जाता है, और वह है 2 थिस्सलुनीकियों। और मैं अध्याय 2, 1-12 पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ।

2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12, और मुझे उन आयतों को पढ़ने दें। अब, हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के बारे में, वह शब्द आना पारूसिया है, जिसका उपयोग लगातार इतिहास के अंत में मसीह के आगमन के संदर्भ में किया जाता है, जिसे धर्मशास्त्री दूसरा आगमन कहते हैं। हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन और हमारे उनके पास एकत्रित होने के बारे में, हम आपसे, भाइयों और बहनों से अनुरोध करते हैं कि आप आसानी से परेशान या परेशान न हों, चाहे वह किसी भविष्यवाणी से हो, किसी संदेश से हो या किसी पत्र से हो, जो माना जाता है कि प्रभु का दिन पहले ही आ चुका है।

इसलिए, श्लोक 3, किसी को भी किसी भी तरह से धोखा न दें। इसलिए, समस्या यह है कि थिस्सलुनीकियों के ईसाइयों ने सोचा कि प्रभु का दिन पहले ही आ चुका है। प्रभु का दिन एक पुराने नियम का शब्द है जिसका उपयोग भविष्य के उस दिन को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जब परमेश्वर इतिहास में हस्तक्षेप करेगा, अपने शत्रुओं को न्याय दिलाएगा, और अपने लोगों को उद्धार दिलाएगा, और थिस्सलुनीकियों ने सोचा कि वह दिन पहले ही आ चुका है।

परमेश्वर के अपने राज्य की स्थापना करने, न्याय और उद्धार लाने, अर्थात् संसार के अंत का समय पहले ही आ चुका था। उन्होंने सोचा कि वे प्रभु के दिन में थे। पद 3, किसी भी तरह से किसी को धोखा न दें, क्योंकि वह दिन तब तक नहीं आएगा जब तक कि धर्मत्याग पहले न हो जाए, और अधर्म का मनुष्य प्रकट न हो जाए, जो विनाश के लिए अभिशप्त है।

वह हर तथाकथित ईश्वर या आराधना की वस्तु का विरोध करता है और खुद को उससे ऊपर रखता है ताकि वह ईश्वर के मंदिर में बैठकर घोषणा करे कि वह खुद ईश्वर है। क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तो मैं तुम्हें इसके बारे में बताया करता था। और तुम जानते हो कि वर्तमान में उसे क्या रोक रहा है ताकि वह अपने समय में प्रकट हो, क्योंकि अधर्म का रहस्य पहले से ही काम कर रहा है, लेकिन जो अब उसे रोक रहा है वह तब तक ऐसा करता रहेगा जब तक कि उसे रास्ते से हटा न दिया जाए।

और फिर अधर्मी या अधर्म का आदमी प्रकट होगा। प्रभु यीशु अपने मुँह की साँस से उसे नष्ट कर देगा और अपने आगमन के समय उसे नष्ट कर देगा। अधर्मी का आना शैतान के सभी प्रकार के झूठे चमत्कारों, चिह्नों और चमत्कारों और नाश होने वालों के बीच हर दुष्ट धोखे के साथ काम करने पर आधारित है।

वे इसलिए नाश हो जाते हैं क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को स्वीकार नहीं किया और इसलिए बचाए नहीं जा सकते। इस कारण से परमेश्वर उन्हें एक मजबूत भ्रम भेजता है, ताकि वे झूठ पर विश्वास करें, ताकि सभी लोग दोषी ठहराए जाएँ, जिन्होंने सत्य पर विश्वास नहीं किया, बल्कि अधर्म में आनंद लिया। और मैं आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ कि यहाँ पौलुस क्या कर रहा है।

पौलुस थिस्सलुनीकियों को यह मानने से रोकने की कोशिश करने जा रहा है कि वे पहले से ही प्रभु के दिन में हैं। और जिस तरह से वह ऐसा करता है वह कुछ ऐसी चीज़ों की ओर इशारा करता है जो अभी तक नहीं हुई हैं और जिन्हें प्रभु के दिन के आने से पहले होना ही है। दूसरे शब्दों में, पौलुस का तर्क यह है।

प्रभु के दिन के आने से पहले कुछ बातें होनी ही चाहिए। दूसरी बात, वे बातें अभी तक नहीं हुई हैं, इसलिए निष्कर्ष यह है कि प्रभु का दिन अभी नहीं आया है। थिस्सलुनीकियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे प्रभु के दिन में हैं, क्योंकि ये बातें, जिनके बारे में पौलुस आश्चर्य है कि प्रभु के दिन के आने से पहले उन्हें होना ही चाहिए, अभी तक नहीं हुई हैं।

इसलिए, थिस्सलुनीकियों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे प्रभु के दिन में हैं। अब, वे कौन सी बातें हैं जिनकी ओर लेखक इशारा करता है, या जिनकी ओर पौलुस इशारा करता है? वे तीन हैं। पद 3 में विद्रोह, और फिर अधर्म के आदमी का उल्लेख पद 3, 6 और 8 में किया गया है। और फिर रोकने वाले को हटा दिया गया।

रोकनेवाला, वह जो अधर्म के आदमी को रोके हुए है और उसे रोके हुए है। एक बार रोकनेवाले को हटा दिया जाए, तो अधर्म का आदमी प्रकट हो सकता है। पॉल को यकीन है कि उन तीनों में से कोई भी अभी तक नहीं हुआ है।

उन्हें अभी भी पूरा होना बाकी है। इसलिए, जब तक वे पूरे नहीं हो जाते, तब तक प्रभु का दिन नहीं आ सकता। इसलिए, थिस्सलुनीकियों को यह सोचकर धोखा नहीं खाना चाहिए कि वे पहले से ही प्रभु के दिन में हैं।

अब, वे चीज़ें क्या हैं? पहली है विद्रोह। विद्रोह क्या है? क्या यह कोई स्थानीय चीज़ है? क्या यह पूरी धरती पर फैला हुआ है? क्या यह विद्रोह धार्मिक है? क्या यह राजनीतिक है? क्या यह ईसाइयों या गैर-ईसाइयों द्वारा है? इसे कौन शुरू करने जा रहा है, या इसे क्या शुरू करने जा रहा है? पॉल हमें नहीं बताता। अब, इससे पहले कि हम इस और अन्य घटनाओं को संक्षेप में देखें, अन्य दो घटनाएँ जिनके बारे में पॉल आश्चर्य है कि होनी ही चाहिए, यह समझना महत्वपूर्ण है कि पद 5 कार्यों में एक प्रकार की बाधा डालता है।

जब पौलुस कहता है, " क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तो मैं तुम्हें ये बातें बताता था।" दूसरे शब्दों में, पौलुस सारी बातें विस्तार से नहीं बताएगा। वह उन्हें ये बातें पहले ही बता चुका है, इसलिए उसे बस उन्हें याद दिलाने की ज़रूरत है।

दुर्भाग्य से, 2,000 साल बाद, हम अंधेरे में हैं और यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि पौलुस इन बातों से क्या मतलब रखता था। दुर्भाग्य से, उसने पहले ही उन्हें बता दिया था। थिस्सलुनीकियों को, संभवतः, पता था कि वह किस बारे में बात कर रहा था, जैसा कि पौलुस को भी पता था।

और अब, हम ज़्यादा जानकारी के लिए तैयार नहीं हैं, इसलिए हम पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकते। तो, यह क्या था? यहाँ तक कि कुछ भविष्यसूचक कार्य, जैसे कि 1 हनोक अध्याय 93 और श्लोक 9, व्यापक धर्मत्याग की आशंका जताते हैं। मत्ती 24 में खुद यीशु ने सिखाया कि बहुतों का प्यार ठंडा पड़ जाएगा।

यह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि पॉल के मन में यही बात थी। लेकिन मुख्य बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि पॉल जो कुछ भी कह रहा है, वह ठीक वैसा ही है, और पॉल को यकीन है कि यह अभी तक नहीं हुआ है। नंबर दो, अधर्म का आदमी जो प्रकट होने जा रहा है।

यह तथ्य कि वह प्रकट होने जा रहा है, यह दर्शाता है कि वह प्रकट नहीं है। पॉल ने कहा कि अधर्म का रहस्य पहले से ही काम कर रहा है, लेकिन अधर्म का आदमी अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। फिर से, इसे पढ़ते हुए, यह बताना मुश्किल है कि पॉल किस हद तक सर्वनाशकारी भाषा का उपयोग कर रहा है। क्या अधर्म का आदमी एक व्यक्ति है? क्या यह एक ऐसी शक्ति का प्रतीक है जो पूरी दुनिया को जीवंत करती है? क्या वह मंदिर जिसमें वह खुद को स्थापित करता है, क्या वह एक वास्तविक मंदिर है? या फिर, क्या यह केवल इस तथ्य का प्रतीक है कि अधर्म का आदमी, चाहे वह कोई भी हो या जो भी हो, परमेश्वर का विरोध करेगा और परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर की आराधना का विरोध करेगा? और यह कहने का एक प्रतीकात्मक तरीका है।

यह बताना मुश्किल है कि पौलुस के मन में क्या है। लेकिन फिर से, मुख्य बात यह है कि पौलुस को यकीन है कि अधर्म का आदमी अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। इसलिए, प्रभु का दिन आ सकता है।

गॉर्डन फ्री कहते हैं कि हमारे पास अनुमान लगाने के लिए बहुत कुछ बचा है। और शायद वह सही हैं, खास तौर पर इस मामले में, लेकिन तीनों मामलों में। फिर, अधर्म के आदमी से संबंधित, अवरोधक को हटाना होगा।

और इस पर सभी तरह की बहस हुई है: दुनिया में कौन या दुनिया में क्या यह रोकने वाला है? कुछ विकल्प हैं, यह रोमन साम्राज्य है, यह कानून और व्यवस्था का सामान्य सिद्धांत है, यह सुसमाचार है, ईसाइयों द्वारा सुसमाचार का प्रसार, यह पवित्र आत्मा है, यह शैतान है। कुछ लोगों ने डैनियल 10 और पद 13 और डैनियल 12 और पद 1 के आधार पर माइकल द आर्कहेल के

लिए सुझाव दिया और तर्क दिया है। तो, आप अपनी पसंद चुनें। फिर से, समस्या यह है कि पॉल, पद 5 के अनुसार, पहले से ही उनके साथ इस बारे में बात कर चुका है, और वह मानता है कि वे जानते हैं कि वे किस बारे में बात कर रहे हैं, इसलिए उसे इसे विस्तार से बताने की कोई आवश्यकता नहीं दिखती।

और हम ही हैं जो इसे समझने के लिए संघर्ष करते हैं। इसलिए, मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है, और जिस पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, भले ही हम यह पता न लगा सकें कि ये चीजें किससे या किससे संबंधित हैं, पॉल का कहना है कि वे अभी तक नहीं हुई हैं। पॉल यह नहीं कहते कि क्या उन्हें लगता है कि वे अभी भी उनके जीवनकाल में हो सकती हैं।

शायद उनके जीवनकाल में ही चीजें इतनी बढ़ गई होंगी कि ये सब हो सकता है। पॉल यह नहीं कहता कि 2,000 साल की देरी होने वाली है, लेकिन साथ ही, निश्चित रूप से, पॉल कुछ देरी की अनुमति दे रहा है। ऐसा न हो कि वे सोचें कि वे पहले से ही प्रभु के दिन में हैं, या शायद हमें यह कहना चाहिए, ऐसा न हो कि हम 1 थिस्सलुनीकियों 4 में उनकी भाषा को वापस लें, हम जो जीवित हैं, ऐसा न हो कि हम इसे बहुत गंभीरता से लें, हमें यहाँ दिए गए कथनों के साथ इसे संतुलित करने की आवश्यकता है, कि पॉल को लगता है कि मसीह तुरंत वापस नहीं आ सकता है।

क्योंकि कुछ चीजें हैं, चाहे वे कुछ भी हों, जो मसीह के वापस आने से पहले होनी चाहिए। और वे अभी तक नहीं हुई हैं, क्षमा करें, वे अभी तक नहीं हुई हैं, इसलिए पॉल आश्वस्त है कि पाठक प्रभु के दिन में नहीं हैं, और मसीह जरूरी नहीं कि तुरंत वापस आ जाए। इसलिए, एक और बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि जब आप 1 और 2 थिस्सलुनीकियों को एक साथ जोड़ते हैं, जहाँ तक वे नए नियम के व्यापक कैनन के भीतर कैसे संबंधित हैं, हम कह सकते हैं कि 1 थिस्सलुनीकियों हमें याद दिलाता है कि मसीह जल्द ही वापस आ सकता है।

हमारे जीवनकाल में ही, हम जो अभी भी जीवित हैं और जो बचे हैं, हवा में उससे मिलने के लिए उठाए जाएँगे। लेकिन 2 थिस्सलुनीकियों ने हमें याद दिलाकर इसे संतुलित किया है कि इसमें कुछ देरी हो सकती है। कुछ ऐसी चीजें हैं, कम से कम पौलुस के दिनों में, जो अभी तक नहीं हुई हैं, जिन्हें प्रभु के दिन के आने से पहले होना ही है।

और फिर भी, पॉल यह नहीं कह रहा है कि जैसे ही वे घटित होंगे, प्रभु का दिन तुरंत आ जाएगा, लेकिन उसका पूरा मुद्दा यह है कि थिस्सलुनीकियों के पाठकों और संभवतः हमें भी इस या उस पर ध्यान देने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए और यह नहीं कहना चाहिए कि मसीह का आगमन बहुत करीब है। पॉल को यकीन है कि इसमें देरी हो सकती है क्योंकि कुछ चीजें अभी तक नहीं हुई हैं जो मसीह के वापस आने से पहले होनी चाहिए। यीशु के दृष्टांतों, विश्वासघाती प्रबंधक और पाँच बुद्धिमान युवतियों की शिक्षाओं की तरह, विश्वासघाती प्रबंधक स्वामी के जल्दी वापस आने के लिए तैयार नहीं था।

पाँच मूर्ख युवतियाँ देरी के लिए तैयार नहीं थीं। उसी तरह, ये दोनों किताबें हमें याद दिलाती हैं कि हमें किसी भी परिदृश्य के लिए तैयार रहना चाहिए। हमें किसी भी दृष्टिकोण के लिए तैयार रहना चाहिए।

मसीह जल्द ही वापस आ सकते हैं। वह हमारे जीवनकाल में वापस आ सकते हैं। हम जो जीवित हैं।

लेकिन, यह तथ्य कि पॉल ने कहा कि कुछ ऐसी चीजें हैं जो नहीं हुई हैं, और यह तथ्य कि हम ठीक से नहीं जानते कि वे क्या हैं, हमें याद दिलाता है कि मसीह के वापस आने में कुछ देरी हो सकती है। परमेश्वर के लोगों को दोनों ही परिदृश्यों के लिए तैयार रहना चाहिए। पॉल में अन्य अंश भी हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि वे प्रमुख हैं।

एक बार फिर, मैं यह कहकर निष्कर्ष निकालूंगा कि पॉल ने जो कुछ भी कहा है, उससे हमें यह विश्वास नहीं होता कि उसने सोचा था कि मसीह तुरंत वापस आ जाएगा, उसके जीवनकाल में, उसके पाठकों में, कि मसीह को वापस आना ही था, और इसलिए वह गलत था। हाँ, पॉल सोचता है कि मसीह वापस आ सकता है। और वह अपने पाठकों को इसकी याद दिलाता है।

वह खुद भी इसी के प्रकाश में अपना जीवन जीता है। लेकिन साथ ही, वह यह भविष्यवाणी करने से चूक जाता है कि मसीह अवश्य ही आएगा। 2 थिस्सलुनीकियों जैसे पाठ में, मसीह के वापस आने में कुछ देरी की संभावना भी जताई गई है।

और अपने पाठकों को दोनों के लिए तैयार रहने के लिए कहता है। अब, हमने यीशु की कही गई बातों को देखा है, उनमें से बहुत सी बातों को, और निष्कर्ष निकाला है कि यीशु ने जो कुछ भी कहा है, उससे हमें यह विश्वास नहीं होता कि वह अंत की भविष्यवाणी कर रहा था और गलत था। हमने पौलुस के पत्रों और प्रेरितों के काम को समग्र रूप से देखा है, और हमने देखा है कि वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करे कि पौलुस ने दुनिया के अंत या यीशु के आने की भविष्यवाणी की थी, और वह अपने जीवनकाल में था, और गलत था।

नए नियम के बाकी हिस्सों के बारे में क्या? खैर, अगले व्याख्यान के भाग में, हम उन कई अंशों को देखेंगे जिन्हें सामान्य पत्र कहा जाता है, एक तरह से इब्रानियों से लेकर यहूदा तक। साथ ही, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखना शुरू करेंगे और उन पुस्तकों में कई कथनों को देखेंगे जिन्हें अक्सर यह सुझाव देने के लिए लिया गया है कि यीशु गलत थे। लेकिन ऐसा करने से पहले, मैं एक विशेष पाठ को देखकर सामान्य पत्रों का परिचय देना चाहता हूँ जो अन्य सभी पाठों से कुछ अलग करता है।

यह एक ऐसा पाठ है जो अद्वितीय है, क्योंकि यह देरी के मुद्दे को संबोधित करता है। यह वास्तव में इस मुद्दे को संबोधित करता है: मसीह तुरंत वापस क्यों नहीं आया? क्या इसका मतलब है कि वह वापस नहीं आ रहा है? क्या इसका मतलब है कि परमेश्वर अपने वादों में विफल रहा है? हमें इसे कैसे समझना चाहिए? हमें इसे कैसे समझना चाहिए? और वह पाठ है 2 पतरस, अध्याय 3, श्लोक 8 से 10। एक बार फिर, मैं उन्हें आपके लिए पढ़ना चाहता हूँ, और फिर हम बस कुछ श्लोकों और उन श्लोकों में कुछ कथनों को खोलेंगे।

लेकिन 2 पतरस, अध्याय 3, 8 से 10. प्यारे दोस्तों, इस एक तथ्य को नज़रअंदाज़ मत करो। प्रभु के लिए, एक दिन हज़ार साल के समान है, और हज़ार साल एक दिन के समान है।

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा में विलम्ब नहीं करता, जैसा कि कुछ लोग समझते हैं, परन्तु तुम्हारे विषय में धीरज रखता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, परन्तु यह चाहता है कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आएगा। उस दिन आकाश बड़ी गरज के साथ चला जाएगा, और तत्व जलकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम प्रगट हो जाएंगे।

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि पतरस ने यह क्यों लिखा। पतरस उन पुस्तकों में से एक है, जो नए नियम में कई पुस्तकों में से एक है, जो झूठे शिक्षकों के मुद्दे को संबोधित करती है जिन्होंने चर्च में घुसपैठ की है या जो परमेश्वर के लोगों को प्रभावित करने के खतरे में हैं। और जब आप 2 पतरस को ध्यान से पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मुख्य समस्या यह है कि ये झूठे शिक्षक इस बात पर सवाल उठा रहे थे कि क्या परमेश्वर वास्तव में भविष्य में आकर न्याय करने वाला है।

और वे वास्तव में निष्कर्ष निकाल रहे थे, वह नहीं है। और वे यह साबित करने के लिए अलग-अलग तर्क दे रहे थे कि यीशु न्याय करने के लिए वापस नहीं आने वाले हैं, और इसलिए, आप जैसा चाहें वैसा रह सकते हैं। आप किसी भी यौन अनैतिकता में लिप्त हो सकते हैं, या जो चाहें कर सकते हैं क्योंकि भविष्य में कोई न्यायाधीश नहीं आने वाला है जिसके लिए आप जिम्मेदार होंगे।

पतरस 2 में जो किया गया है, वह मूल रूप से शिक्षकों के तर्कों को तोड़ता है और दिखाता है कि हाँ, वास्तव में, परमेश्वर वापस आकर न्याय करने जा रहा है। यीशु वापस आकर न्याय करने जा रहा है। इसलिए, यह मायने रखता है कि आप कैसे जीते हैं।

और अध्याय 3 में, इन आयतों में जो हमने पढ़ा है, अध्याय 3 में, यह झूठे शिक्षकों के खिलाफ पतरस के तर्कों में से एक का हिस्सा है। और उनका तर्क शायद कुछ इस तरह का रहा होगा। खैर, इतिहास कुछ समय तक चलता रहा है।

इतिहास हमेशा की तरह चलता रहा है, मसीह वापस नहीं आया है, भगवान ने न्याय करने के लिए हस्तक्षेप नहीं किया है, इसलिए वह ऐसा करने वाला नहीं है। उसे देरी हो रही है। दूसरे शब्दों में, वे देरी की ओर इशारा कर रहे हैं।

यह तथ्य कि परमेश्वर ने देरी की है, यह तथ्य कि न्याय करने के लिए उसके भविष्य के आगमन का वादा अभी तक पूरा नहीं हुआ है, इसका मतलब यह होना चाहिए कि वह वापस नहीं आने वाला है। इसलिए, झूठे शिक्षक, वास्तव में यीशु मसीह के माध्यम से परमेश्वर के आने के वादे में देरी की ओर इशारा कर रहे थे, यह प्रमाण के रूप में कि परमेश्वर न्याय करने वाला नहीं था। इसलिए, पाठक जो चाहें कर सकते हैं।

और मुझे लगता है कि इन आयतों में पतरस जो करने जा रहा है, वह उस देरी के लिए एक कारण, एक तर्क प्रदान करना है। यह दिखाने के लिए कि यह तथ्य कि परमेश्वर ने देरी की है, यह साबित नहीं करता कि वह वापस नहीं आने वाला है। उसके देरी करने का एक कारण है।

और यहाँ पतरस का जवाब है। उसका जवाब वास्तव में दो-तरफ़ा है। अध्याय 3 की आयत 4, वास्तव में, इस मुद्दे का सारांश प्रस्तुत करती है।

वह आगमन कहाँ है जिसका उसने वादा किया था? झूठे शिक्षक यही कह रहे थे। वह आगमन कहाँ है जिसका उसने वादा किया था? यह नहीं हुआ है, इसलिए यह होने वाला नहीं है। यानी, इसमें देरी हुई है।

अब, पतरस देरी के लिए एक तर्क, एक स्पष्टीकरण देने जा रहा है। यह दो भागों में आता है। पहला भाग श्लोक 5 से 7 में है। मूल रूप से, पतरस की प्रतिक्रिया यह है।

परमेश्वर ने अतीत में भी हस्तक्षेप किया था जब उसने सभी चीज़ों की रचना की थी, उत्पत्ति 1 और 2, इसलिए आपको बेहतर होगा कि आप विश्वास करें कि परमेश्वर न्याय करने के लिए अपनी रचना में फिर से हस्तक्षेप कर सकता है। लेकिन फिर, जिस प्रतिक्रिया में हम रुचि रखते हैं वह श्लोक 8 और 9, और यहाँ तक कि 10 में भी पाई जाती है। इसके पहले दो भाग हैं।

सबसे पहले, पहला यह है कि एक हज़ार साल एक दिन के समान है, और एक दिन भगवान के लिए एक हज़ार साल के समान है। अब, उसका इससे क्या मतलब है? यह देरी को कैसे समझाता है? इसे वर्णित करने के कई तरीके हैं। कुछ लोगों ने सोचा है कि ये आयतें बताती हैं कि भगवान समय नहीं देखते हैं।

ईश्वर को समय का कोई क्रम या क्रम नहीं दिखता। वह हर चीज़ को एक शाश्वत वर्तमान के रूप में देखता है। ईश्वर समय से परे है।

वह समय तक सीमित नहीं है। वह समय से बंधा हुआ नहीं है। वह समय को उस तरह नहीं देखता और अनुभव नहीं करता जिस तरह हम करते हैं।

तो, यह लगभग एक तरह का ऑन्टोलॉजिकल कथन बन जाता है कि ईश्वर कौन है और वह कैसा है। हालाँकि, मुझे यकीन नहीं है कि लेखक यही कह रहा है। ध्यान दें कि वह कहता है कि एक हज़ार साल एक दिन के समान है।

ऐसा नहीं है कि एक हज़ार साल सिर्फ़ एक दिन के बराबर है, और एक दिन एक हज़ार साल है अगर भगवान समय नहीं बताते और एक दिन और एक हज़ार साल के बीच का अंतर नहीं जानते। उनके लिए यह सब एक समान है क्योंकि वह शाश्वत ईश्वर हैं, और उनके लिए सब कुछ सिर्फ़ एक शाश्वत क्षण है। इसके बजाय, मुझे लगता है कि इसे इस तरह से समझना सबसे अच्छा है।

मैं इस अवलोकन के लिए सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त न्यू टेस्टामेंट प्रोफेसर रिचर्ड बालकॉम का आभारी हूँ। वे कहते हैं कि इसे समझने का तरीका यह नहीं है कि ईश्वर शाश्वत है और वह समय को नहीं देखता, बल्कि ईश्वर समय को उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखता है जो शाश्वत है।

वह जो इतिहास की शुरुआत और अंत में खड़ा है। वह जो इतिहास की संपूर्णता को एक साथ देखता है। यही वह दृष्टिकोण है जिससे वह समय को मनुष्यों के सीमित दृष्टिकोण के विपरीत देखता है।

कम से कम संयुक्त राज्य अमेरिका में, मेरा मानना है कि औसत जीवन प्रत्याशा लगभग 80 वर्ष है, इसमें कुछ वर्ष कम या ज्यादा हो सकते हैं। दुनिया भर के विभिन्न देशों में, यह बहुत अलग हो सकता है। लेकिन मुद्दा यह है कि हम समय को 50, 60, 70, 80 वर्षों के अपने सीमित दृष्टिकोण से देखते हैं।

शायद अगर आप भाग्यशाली रहे तो आप 90 या 100 साल तक जीवित रह सकते हैं। कुछ लोग ऐसा कर पाते हैं। लेकिन इतिहास के हिसाब से यह बहुत ज्यादा नहीं है।

मुद्दा यह है कि जब हम इतिहास को 80 साल के अपने सीमित दृष्टिकोण से देखते हैं, तो कुछ कम या ज्यादा, देरी काफी महत्वपूर्ण लगती है। जबकि ईश्वर चीजों को उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखता है जो शाश्वत है और समय की शुरुआत और अंत में खड़ा है। और जो हमें देरी लगती है, वह उसके लिए नहीं है।

ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि वह समय नहीं देखता और उसके लिए सब कुछ बस एक पल में है। ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि वह समय को हमारे सीमित मानवीय परिमित दृष्टिकोण से नहीं देखता। वह समय देखता है।

हाँ, संभवतः वह समय और क्रम देख सकता है। लेकिन वह समय का संपूर्णता में सर्वेक्षण करता है। वह अंत से लेकर आरंभ तक देखता है।

और इसलिए, जो हमें असहनीय देरी लगती है, वह उस व्यक्ति के लिए कुछ भी नहीं है जो पूरे इतिहास को उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखता है जो शाश्वत है। यह शुरुआत और अंत में खड़ा है। यह उसके लिए देरी नहीं है।

यह उत्तर का पहला भाग है। पतरस द्वारा दिए गए उत्तर का दूसरा भाग यह है कि देरी वास्तव में मानवता को पश्चाताप करने का अवसर देती है। यदि परमेश्वर तुरंत वापस आकर न्याय करे, तो इससे पश्चाताप करने के सभी अवसर समाप्त हो जाएँगे।

इसलिए, यह तथ्य कि परमेश्वर देरी करता है और तुरंत वापस नहीं आता है, उसकी योजना का हिस्सा है कि वह मानवता को पश्चाताप करने का मौका दे। अब, शायद यह देरी के सभी कारणों को नहीं बताता है, लेकिन यह निश्चित रूप से एक महत्वपूर्ण कारण है। कि परमेश्वर मानवता को पश्चाताप करने का मौका दे रहा है।

अपनी संप्रभुता में, अपने बुद्धिमान उद्देश्यों और संप्रभु योजना में, उसने मानवता को जवाब देने और उन्हें पश्चाताप करने का मौका देने का फैसला किया है। इसलिए, वह तुरंत वापस आने में देरी करता है क्योंकि अगर वह ऐसा करता है, तो इसका मतलब पश्चाताप करने के अवसरों का अंत होगा। इसका मतलब उन लोगों के लिए न्याय होगा जो विश्वास करने में विफल रहते हैं।

इसलिए, पतरस 2 पतरस देरी के लिए सबसे स्थायी स्पष्टीकरण प्रदान करता है, सबसे पहले, यह सुझाव देते हुए कि परमेश्वर इतिहास और समय को हमारे सीमित, सीमित मानवीय दृष्टिकोण से नहीं देखता है, जिसका जीवनकाल लगभग 80 वर्ष है। इसके बजाय, परमेश्वर सभी समय को उस व्यक्ति के दृष्टिकोण से देखता है जो शाश्वत है, जो शुरुआत और अंत में खड़ा है। और हमारे लिए, हमारे छोटे, सीमित, सीमित दृष्टिकोण से, जो असहनीय देरी की तरह लगता है, वह वास्तव में नहीं है।

दूसरा, देरी का कारण यह है कि परमेश्वर वास्तव में मानवता को पश्चाताप करने का मौका दे रहा है। पाठ हमें यह नहीं बताता कि परमेश्वर पश्चाताप का जवाब दे रहा है और कह रहा है, ठीक है, पर्याप्त लोगों ने पश्चाताप नहीं किया है। मैं इसे तब तक टालता रहूँगा और टालता रहूँगा जब तक यह नहीं हो जाता।

लेकिन यह निश्चित रूप से हमें बताता है कि परमेश्वर मनुष्यों को पश्चाताप करते हुए और स्वयं के बारे में एक उद्धारक ज्ञान प्राप्त करते हुए देखने की आवश्यकता और अपनी इच्छा के जवाब में अपने आगमन में देरी कर रहा है। इसलिए, कम से कम 2 पतरस 3 से पता चलता है कि देरी मसीह की वापसी की समझ का हिस्सा थी, कि पतरस ने खुद नहीं सोचा था कि मसीह को तुरंत वापस आना था। जो लोग सोचते थे कि मसीह आने वाला था, उनके लिए यह तथ्य कि वह तुरंत वापस नहीं आया, इसका मतलब था कि वह बिल्कुल भी वापस नहीं आने वाला था, जिसने पतरस को देरी का कारण बताने के लिए प्रेरित किया।

और इसलिए, मसीह की वापसी के बारे में हम जो सोचते हैं, उसे समझने में इसे शामिल किया जाना चाहिए। अब तो नए नियम के लेखक भी यह समझ गए हैं कि इसमें कुछ देरी हो सकती है, कि मसीह तुरंत वापस नहीं आ सकता है, और पतरस इस देरी के कारणों का स्पष्टीकरण देता है। हमारे अगले व्याख्यान में, हम पतरस और याकूब में मसीह की जल्द वापसी के बारे में कुछ बहुत छोटे संदर्भों को देखेंगे, और फिर हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर आगे बढ़ेंगे और इसके कुछ कथनों पर विचार करेंगे जो मसीह की जल्द वापसी की ओर इशारा करते हैं।

यह डॉ. डेविड मैथ्यूसन द्वारा इस प्रश्न पर दिया गया शिक्षण है, "उसका आगमन कहां है?" सत्र 3, पॉल की शिक्षा में पारूसिया का विलम्ब।